रोल नं. ☐☐☐☐☐☐☐☐

प्रश्न-पत्र कोड 2/1/1

हिंदी (आधार)

CBSE Class XII Board Examination 2026 — with answers

निर्धारित समय: 3 घंटे **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश:

1. प्रश्न-पत्र तीन खंडों – क, ख और ग – में बँटा है; तीनों खंडों के प्रश्न हल करना अनिवार्य है।
2. खंड क में अपठित बोध (गद्यांश और काव्यांश) पर आधारित प्रश्न हैं; इसके सभी प्रश्न करने हैं।
3. खंड ख में अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक से प्रश्न हैं; इनमें आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
4. खंड ग में पाठ्यपुस्तक आरोह और वितान से प्रश्न हैं; इनमें भी आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
5. जहाँ तक हो सके, तीनों खंडों के उत्तर क्रम से लिखिए।

खंड – क

अपठित बोध (18 अंक): एक अपठित गद्यांश (10 अंक) और एक अपठित काव्यांश (8 अंक); सभी प्रश्न अनिवार्य।

1. *अपठित गद्यांश – सभ्यता (मनुष्य की बाहरी, भौतिक उन्नति) और संस्कृति (भीतरी उन्नति, कला व मानवीय गुण) के अंतर पर – यहाँ प्रस्तुत नहीं। प्रश्न 1 (i)–(iii) बहुविकल्पी/कथन-कारण (1-1 अंक), (iv) 1 अंक, (v)–(vii) 2-2 अंक के लघु उत्तरीय प्रश्न इसी पर आधारित हैं।* **10**

2. *अपठित काव्यांश – धूप, फूली सरसों, पक्षियों और नदी के चित्रों के सहारे गाँव की प्राकृतिक छटा का वर्णन – यहाँ प्रस्तुत नहीं। प्रश्न 2 (i)–(iii) बहुविकल्पी (1-1 अंक), (iv) 1 अंक, (v)–(vi) 2-2 अंक के लघु उत्तरीय प्रश्न इसी पर आधारित हैं।* **8**

खंड – ख

अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक पर आधारित प्रश्न (22 अंक)।

3. *दिए गए तीन विषयों में से किसी एक पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए।* **6**

लगभग 120 शब्दों में 'जंक फूड का बढ़ता चलन' विषय पर एक रचनात्मक लेख लिखिए।

उत्तर

शीर्षक + भूमिका (जंक फूड क्या है) + बढ़ते चलन के कारण + स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव + समाधान/संतुलित आहार का संदेश वाला निष्कर्ष।

अंक-विभाजन: विषय-वस्तु 4, भाषा 1, प्रस्तुति 1।
नमूना लेख – 'स्वाद के पीछे छिपा खतरा': आज शहर हो या कस्बा, हर गली में बर्गर, पिज़्ज़ा, चिप्स और कोल्ड ड्रिंक की दुकानें दिखती हैं। व्यस्त दिनचर्या, आकर्षक विज्ञापन, ऑनलाइन डिलीवरी और 'झटपट' खाने की आदत ने जंक फूड को बच्चों और युवाओं की पहली पसंद बना दिया है। पर इसमें अधिक नमक, चीनी, तेल और कम पोषण होता है। इसका परिणाम है – मोटापा, मधुमेह, उच्च रक्तचाप, दाँतों और पाचन की समस्याएँ तथा पढ़ाई में थकान। घर का ताज़ा भोजन, मौसमी फल, अंकुरित अनाज इसकी अच्छी जगह ले सकते हैं। विद्यालयों की कैंटीन में पौष्टिक विकल्प हों और माता-पिता स्वयं उदाहरण बनें। स्वाद कभी-कभार ठीक है, पर आदत बन जाए तो यह सेहत का दुश्मन है।
ध्यान दें: शीर्षक दें, अनुच्छेदों में क्रम रखें, अपने विचार और उदाहरण जोड़ें; शब्द-सीमा का पालन करें।

अथवा

लगभग 120 शब्दों में 'महानगरों का बढ़ता आकर्षण' विषय पर एक रचनात्मक लेख लिखिए।

उत्तर

शीर्षक + महानगर क्यों खींचते हैं (रोज़गार, शिक्षा, सुविधाएँ, चमक-दमक) + दूसरा पक्ष (भीड़, प्रदूषण, महँगाई, अकेलापन) + संतुलित विकास पर निष्कर्ष।

अंक-विभाजन: विषय-वस्तु 4, भाषा 1, प्रस्तुति 1।
नमूना लेख – 'सपनों का शहर': गाँव और छोटे कस्बों से हर साल लाखों लोग दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु जैसे महानगरों की ओर चल पड़ते हैं। यहाँ नौकरियाँ हैं, अच्छे शिक्षा संस्थान और अस्पताल हैं, मनोरंजन के साधन और आधुनिक जीवन-शैली है – यही इनका आकर्षण है। पर इस चमक के पीछे भीड़ भरी लोकल ट्रेनें, ट्रैफ़िक जाम, प्रदूषित हवा, झुग्गियाँ, महँगे मकान और पड़ोसियों से भी अनजान रहने वाला अकेलापन भी है। गाँव खाली हो रहे हैं और शहरों पर बोझ बढ़ रहा है। यदि छोटे शहरों और गाँवों में भी रोज़गार, शिक्षा और स्वास्थ्य की सुविधाएँ पहुँचें तो यह पलायन रुक सकता है। विकास का अर्थ केवल महानगर नहीं, पूरे देश का संतुलित उन्नयन होना चाहिए।

अथवा

लगभग 120 शब्दों में 'बाज़ारों का बदलता स्वरूप' विषय पर एक रचनात्मक लेख लिखिए।

उत्तर

शीर्षक + पुराने हाट/मेले/मोहल्ले की दुकानें + आज के मॉल, ऑनलाइन शॉपिंग, डिजिटल भुगतान + लाभ (सुविधा, विकल्प) व हानि (दिखावा, छोटे दुकानदारों पर असर, फ़िज़ूलखर्ची) + विवेकपूर्ण खरीदारी का संदेश।

अंक-विभाजन: विषय-वस्तु 4, भाषा 1, प्रस्तुति 1।
नमूना लेख – 'हाट से ऐप तक': कभी बाज़ार का अर्थ था साप्ताहिक हाट, मेले या मोहल्ले की वह दुकान जहाँ दुकानदार ग्राहक को नाम से जानता था और मोल-भाव के साथ अपनापन भी मिलता था। आज वातानुकूलित मॉल, सुपरमार्केट और मोबाइल पर चलने वाले ऑनलाइन बाज़ार ने इसकी जगह ले ली है। घर बैठे सामान, असंख्य विकल्प, छूट और डिजिटल भुगतान ने खरीदारी आसान कर दी है। पर इसके साथ दिखावे की प्रवृत्ति, अनावश्यक खरीदारी, कर्ज़ और छोटे दुकानदारों की रोज़ी पर संकट भी बढ़ा है। बाज़ार हमारी ज़रूरत पूरी

> करने के लिए है, हमें चलाने के लिए नहीं। अतः ज़रूरत समझकर, सोच-समझकर खरीदारी करना ही बदलते बाज़ार में समझदारी है।

4. *निम्नलिखित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए (4 × 2 = 8)।* **8**

(क) रेडियो को मूल रूप से एकरेखीय (लीनियर) माध्यम क्यों कहा जाता है? लगभग 40 शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

रेडियो में कार्यक्रम एक निश्चित क्रम और समय पर एक बार प्रसारित होता है; श्रोता उसे अपनी इच्छा से आगे-पीछे करके या दोबारा नहीं सुन सकता।

मुख्य बिंदु (कोई दो):

1. प्रसारण क्रम से होता है – जो सुनाया जा रहा है, श्रोता को उसी क्रम में सुनना पड़ता है; अख़बार की तरह मनचाहा हिस्सा पहले नहीं पढ़ सकते।
2. कार्यक्रम का समय और अवधि पहले से तय होती है; छूट गया अंश वापस नहीं मिलता।
3. श्रोता की तत्काल प्रतिक्रिया (फ़ीडबैक) नहीं मिलती, बोलने वाले और सुनने वाले के बीच संवाद नहीं होता।

इसीलिए रेडियो समाचार छोटे वाक्यों और सरल भाषा में लिखे जाते हैं।

(ख) टेलीविज़न समाचार में 'एंकर-बाइट' का क्या अर्थ है? लगभग 40 शब्दों में लिखिए।

उत्तर

एंकर-बाइट टीवी समाचार का वह चरण है जिसमें एंकर की सूचना के साथ घटना से जुड़े व्यक्ति या प्रत्यक्षदर्शी का कथन (बाइट) दिखाकर खबर को प्रामाणिक बनाया जाता है।

मुख्य बिंदु:

1. यह टीवी पर खबर प्रसारित करने का एक चरण है।
2. 'बाइट' का अर्थ है कथन – घटना से संबंधित व्यक्ति, अधिकारी या प्रत्यक्षदर्शी का बयान।
3. एंकर घटना की जानकारी व दृश्य देता है और साथ में बाइट दिखाकर खबर की पुष्टि करता है, जिससे खबर विश्वसनीय बनती है।

(ग) विशेष लेखन की भाषा-शैली सामान्य लेखन की भाषा-शैली से किस तरह अलग होती है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

सामान्य लेखन की भाषा सरल, सरस, बोलचाल वाली और भावात्मक होती है, जबकि विशेष लेखन की भाषा औपचारिक, सटीक, विषय-केंद्रित और उस क्षेत्र की तकनीकी शब्दावली से युक्त होती है।

अंतर के बिंदु:

1. सामान्य लेखन – आम पाठक के लिए, सहज-बोधगम्य, रोचक और भावपूर्ण शैली।
2. विशेष लेखन – किसी विशेष क्षेत्र (खेल, व्यापार, विज्ञान, कानून आदि) पर; शैली औपचारिक, स्पष्ट और विषय पर केंद्रित।
3. सामान्य लेखन में बोलचाल के शब्द; विशेष लेखन में विशिष्ट तकनीकी शब्दावली (जैसे व्यापार में 'सेंसेक्स', 'मुद्रास्फीति'), जिसे लेखक सरल ढंग से समझाता भी है।

(घ) समाचार और फ़ीचर में क्या अंतर होता है? उल्लेख कीजिए।

उत्तर

समाचार ताज़ी घटना की तथ्यपरक सूचना है (उलटा पिरामिड शैली, लेखक की राय नहीं, निश्चित शब्द-सीमा); फ़ीचर सृजनात्मक, आत्मनिष्ठ लेखन है जो सूचना के साथ शिक्षा और मनोरंजन भी देता है (शैली व शब्द-सीमा मुक्त, लेखक की राय संभव)।

कोई दो अंतर:

1. विषय – समाचार तात्कालिक घटना से जुड़ा; फ़ीचर किसी भी विषय पर सृजनात्मक लेखन।

2. उद्देश्य – समाचार सूचना देना/जागरूक करना; फ़ीचर सूचना के साथ शिक्षित करना और मनोरंजन करना।
3. शैली – समाचार उलटा पिरामिड शैली में; फ़ीचर की कोई तय शैली नहीं।
4. राय – समाचार में पत्रकार की निजी राय नहीं; फ़ीचर में लेखक का दृष्टिकोण आ सकता है।
5. शब्द-सीमा – समाचार में सीमित; फ़ीचर अपेक्षाकृत लंबा हो सकता है।

(ङ) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट किसे कहा जाता है?

उत्तर
विशेष रिपोर्ट का वह प्रकार जिसमें उपलब्ध तथ्यों, सूचनाओं और आँकड़ों की गहराई से छानबीन व विश्लेषण करके किसी घटना या मुद्दे के महत्त्वपूर्ण पहलुओं की विस्तृत जानकारी दी जाती है।

मुख्य बिंदु (कोई दो):
1. यह विशेष रिपोर्ट का एक प्रकार है।
2. इसमें सार्वजनिक रूप से उपलब्ध तथ्यों, आँकड़ों व सूचनाओं को जाँच-परखकर उनका विश्लेषण किया जाता है।
3. उद्देश्य – किसी मुद्दे/घटना के कारण, प्रभाव और अहम पहलुओं को पाठक के सामने विस्तार से रखना।

5. *निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए (2 × 4 = 8)।* **8**

(क) 'अप्रत्याशित (नए और अनसोचे) विषयों पर लिखने से लेखन पर पकड़ मज़बूत होती है' – यह कैसे? लगभग 80 शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

ऐसे विषयों पर लिखने से सृजनात्मक क्षमता बढ़ती है, मौलिक अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है, तर्क-उदाहरण से बात पुष्ट करना आता है, भाषा पर अधिकार बनता है और कम समय में विचार संगठित कर लिखने का अभ्यास होता है।

मूल्य बिंदु (कोई चार):

1. रटी-रटाई या तैयार सामग्री का सहारा नहीं होता, इसलिए अपनी सोच से लिखना पड़ता है – सृजनात्मक शक्ति विकसित होती है।
2. विचारों की मौलिक अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है।
3. अपनी बात को तर्क, विचार और उदाहरणों से पुष्ट करना सीखते हैं।
4. शब्द-चयन और वाक्य-रचना का अभ्यास होने से भाषा पर अच्छी पकड़ बनती है।
5. कम समय में विचारों को क्रम से संकलित करके प्रस्तुत करने की क्षमता आती है।
6. कुल मिलाकर लिखित अभिव्यक्ति की क्षमता बढ़ती है।

(ख) कहानी के पात्रों का नाट्य रूपांतरण करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? लगभग 80 शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

पात्रों की दृश्यात्मकता नाटक के अनुरूप हो; उनके हाव-भाव, बोलचाल और तौर-तरीकों का ध्यान रहे; पात्र अभिनय और रंगमंच के अनुकूल हों; मानसिक द्वंद्व को ध्वनि, प्रकाश, स्वगत कथन या वॉयस ओवर से दिखाया जाए।

मूल्य बिंदु:

1. कहानी में वर्णित पात्रों को इस तरह ढालना कि वे मंच पर दिखाई देने योग्य (दृश्यात्मक) बनें।
2. पात्रों की भाव-भंगिमा, वेशभूषा, भाषा और व्यवहार कहानी के अनुसार ही रखना।
3. पात्र ऐसे हों जिनका अभिनय संभव हो और जो रंगमंच की सीमाओं में समा सकें।
4. कहानी में लेखक जो पात्र के मन की बात बताता है, उसे नाटक में स्वगत कथन, वॉयस ओवर, ध्वनि व प्रकाश के प्रयोग से व्यक्त करना।
5. संवाद छोटे, स्वाभाविक और पात्र के स्वभाव के अनुकूल हों।

(ग) रेडियो नाटक के लिए कहानी चुनते समय किन महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है और क्यों? लगभग 80 शब्दों में लिखिए।

उत्तर

कहानी केवल घटना-प्रधान न हो, उसकी अवधि बहुत लंबी न हो और पात्र सीमित हों – क्योंकि रेडियो में सब कुछ ध्वनि से समझना होता है; इससे श्रोता की रुचि बनी रहती है, वह लंबे समय तक जुड़ा रह सके और आवाज़ से पात्रों को पहचानना आसान हो।

बातें (कोई दो) – 2 अंक:

1. कहानी सिर्फ़ घटनाओं पर टिकी न हो; उसमें संवाद और भाव हों।
2. अवधि सीमित हो (लगभग 15-30 मिनट)।
3. पात्रों की संख्या कम हो।

क्यों (कोई दो) – 2 अंक:

1. बहुत सी घटनाएँ केवल सुनकर समझना कठिन और उबाऊ होता है; सीमित कथा में श्रोता की रुचि बनी रहती है।

2. श्रोता की एकाग्रता लंबे समय तक नहीं टिकती।
3. रेडियो में पात्र दिखते नहीं, केवल आवाज़ से पहचाने जाते हैं – कम पात्र हों तो पहचान आसान होती है।

खंड – ग

पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान पर आधारित प्रश्न (40 अंक)।

6. *शमशेर बहादुर सिंह की कविता 'उषा' का पठित काव्यांश (भोर के आकाश के बदलते रंगों का चित्रण; काव्यांश यहाँ प्रस्तुत नहीं) – इस पर आधारित प्रश्नों के लिए सबसे उपयुक्त विकल्प चुनिए (5 × 1 = 5)।* **5**

(क) काव्यांश में 'काली सिल' का उपमान किसके लिए आया है?

(A) अंधकार से युक्त प्रकृति
(B) अँधेरे से युक्त आसमान
(C) अंधकार से युक्त पृथ्वी
(D) रात्रि का अंधकार

उत्तर
(B) अँधेरे से युक्त आसमान

भोर से ठीक पहले आकाश अभी गहरे अँधेरे में होता है। कवि उस गहरे रंग वाले आसमान की तुलना मसाला पीसने वाली काली सिल से करता है। अतः उपमेय 'अँधेरा आसमान' है, केवल रात का अंधकार या पृथ्वी नहीं।

(ख) काली सिल के ज़रा-से लाल केसर से धुल जाने वाली पंक्ति का सही अर्थ क्या है?

(A) भोर का आकाश लालिमा से युक्त है।
(B) भोर का आकाश काला है।
(C) भोर में केसर को धोया गया है।
(D) भोर में काली सिल को धोया गया है।

उत्तर
(A) भोर का आकाश लालिमा से युक्त है।

अँधेरे (काली सिल जैसे) आकाश पर सूर्योदय से पहले हल्की लालिमा फैलने लगती है, मानो काली सिल पर लाल केसर धुल गया हो। यह बिंब बताता है कि भोर का आकाश लालिमा से भर रहा है; यहाँ सचमुच कुछ धोया नहीं गया।

(ग) इस काव्यांश में कवि ने उषा का कौन-सा चित्र प्रस्तुत किया है?

(A) छायाचित्र
(B) रेखाचित्र
(C) शब्दचित्र
(D) भित्तिचित्र

उत्तर
(C) शब्दचित्र

कवि ने रंग, रेखा या कैमरे से नहीं बल्कि शब्दों और बिंबों (चौका, सिल, स्लेट, नील जल) से भोर का गतिशील चित्र खड़ा किया है – इसे शब्दचित्र कहते हैं।

(घ) भोर के आकाश को 'राख से लीपा हुआ चौका' कहकर कवि क्या बताना चाहता है?

(A) वह अपनी आभा से चमत्कृत कर रहा है।
(B) वह प्राकृतिक सुंदरता को बढ़ा रहा है।
(C) उसमें सफ़ेद व नीले रंगों का अद्‌भुत मेल है।
(D) वह नए परिवर्तनों व आयामों का प्रतीक है।

उत्तर
(C) सफ़ेद व नीले वर्णों का अद्‌भुत मिश्रण है।

राख से लीपा गया गीला चौका हल्का स्लेटी-नीला और धूसर-सफ़ेद दिखता है। भोर का आकाश भी ऐसा ही नीला-सफ़ेद मिला-जुला रंग लिए होता है और ओस से नम-सा लगता है। इसलिए यह उपमा रंगों के मिश्रण को दिखाती है।

(ङ) नीले जल में किसी की गोरी झिलमिलाती देह के हिलने वाला बिंब किस अनुभूति से जुड़ा है?

(A) निर्मलता और उज्ज्वलता

(B) कृत्रिमता और पवित्रता

(C) कोमलता और सुंदरता

(D) विस्मय और रहस्य

उत्तर

(A) निर्मलता और उज्ज्वलता

सूर्योदय के समय नीले आकाश में उभरता सूर्य ऐसा लगता है जैसे स्वच्छ नीले जल में कोई गोरी, झिलमिलाती देह हिल रही हो। यह बिंब स्वच्छता (निर्मलता) और चमक (उज्ज्वलता) का भाव देता है।

7. *निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए (2 × 3 = 6)।* **6**

(क) 'कविता के बहाने' (कुँवर नारायण) कविता के आधार पर बताइए कि 'सब घर एक कर देना' पंक्ति बच्चों और कविता – दोनों के संदर्भ में किस प्रकार उचित है।

उत्तर

बच्चे खेलते समय अपना-पराया, घर की सीमा का भेद नहीं मानते; कविता भी देश-काल, जड़-चेतन की सीमाओं को तोड़कर सबको एक सूत्र में बाँधती है – दोनों सरल, सहज और भेदभाव-रहित हैं।

मूल्य बिंदु (कोई तीन):

1. बच्चे भेदभाव नहीं जानते, सबके घर में बेरोक-टोक खेलते हैं; कविता भी समाज को एकता के सूत्र में बाँधती है।
2. बच्चों का हृदय सरल होता है; कविता भी सच्ची अनुभूति से जन्म लेती है।
3. बच्चों का संबंध कोमल भावों से है; कविता भी कोमल भावनाओं की अभिव्यक्ति है।
4. बच्चों के खेल में समय की कोई सीमा नहीं; कविता भी देश-काल और जड़-चेतन की सीमाओं से परे है।

इसलिए कवि को कविता और बच्चों के खेल में समानता दिखती है।

(ख) रघुवीर सहाय की 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता को आप करुणा की कविता मानते हैं या क्रूरता की? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर

मुक्त उत्तर – करुणा: अपाहिज की विवशता और पीड़ा मन को द्रवित करती है; क्रूरता: मीडियाकर्मी संवेदनहीन प्रश्नों से उसके दुख को कुरेदता है और दर्शकों की भावुकता से व्यावसायिक लाभ उठाना चाहता है।

दोनों पक्षों में से एक चुनकर तीन तर्क देने हैं।

करुणा के पक्ष में: अपाहिज व्यक्ति की लाचारी; उसका मन पीड़ा से भरा है; वह अपना दुख शब्दों में कह भी नहीं पाता – यह सब पाठक में करुणा जगाता है।

क्रूरता के पक्ष में: मीडियाकर्मी की संवेदनहीनता; बार-बार चुभते प्रश्न पूछकर अपाहिज का दुख और बढ़ाना; दर्शकों को रुलाकर कार्यक्रम को 'सफल' बनाने की कोरी व्यावसायिकता।

संतुलित उत्तर: कविता का विषय करुणा है, पर वह मीडिया की क्रूरता को उजागर करती है – ऐसा तर्कपूर्ण उत्तर भी मान्य है।

(ग) 'कवितावली' (तुलसीदास) के आधार पर सिद्ध कीजिए कि तुलसीदास का युग बेरोज़गारी से त्रस्त था।

उत्तर

शासक वर्ग प्रजा के प्रति उदासीन था; किसान, व्यापारी, नौकर, भिखारी – किसी को जीविका नहीं मिल रही थी; भूख से लोग उचित-अनुचित हर काम करने और अपनी संतान तक बेचने को विवश थे।

मूल्य बिंदु (कोई तीन):

1. तत्कालीन शासक प्रजा की दशा के प्रति उदासीन थे।
2. जीविका के साधनों का अभाव – किसान को खेती, व्यापारी को व्यापार, चाकर को नौकरी और भिखारी को भीख तक नहीं मिलती थी।
3. पेट की आग बुझाने के लिए लोग नैतिक-अनैतिक, धर्म-अधर्म हर काम करने लगे थे।
4. भूख की विवशता इतनी थी कि लोग अपने बेटे-बेटियों तक को बेच देते थे।

तुलसी ने इस दशा से उबरने का उपाय राम-भक्ति बताया है।

8. *निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए (2 × 2 = 4)।* **4**

(क) आलोक धन्वा की कविता 'पतंग' में भादों बीतने के बाद प्रकृति में आए बदलावों को कवि ने किस प्रकार व्यक्त किया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

जीवंत बिंबों द्वारा – खरगोश की आँखों जैसी लाल सुबह, बादलों का राज्य ख़त्म होना, दिशाओं का उजला होना और वातावरण का उमंग-उल्लास से भर जाना।

मूल्य बिंदु (कोई दो):

1. कवि ने सजीव बिंबों का सहारा लिया है।
2. शरद ऋतु की सुबह की लालिमा की तुलना खरगोश की लाल आँखों से की है।
3. भादों की बारिश और बादलों का साम्राज्य समाप्त हो जाता है, आकाश साफ़ हो जाता है।
4. दिशाएँ उजली और खुली लगने लगती हैं; बच्चों के लिए पतंग उड़ाने का उल्लास भरा मौसम आ जाता है।

(ख) निराला की कविता 'बादल राग' में 'जीवन का पारावार' किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर

बादलों को; क्योंकि वे तपती धरती पर बरसकर फसलों व पेड़-पौधों को नया जीवन देते हैं और शोषित-पीड़ित (सर्वहारा) वर्ग में नई आशा और आनंद जगाते हैं।

किसे (1 अंक): बादल (क्रांति के प्रतीक) को जीवन का पारावार यानी जीवन का अथाह सागर कहा गया है।

क्यों (1 अंक, कोई एक):

1. गरमी से झुलसी धरती पर वर्षा करके हरियाली और फसलों के रूप में नवजीवन देते हैं।
2. भूख-प्यास से त्रस्त लोगों के मन में खुशी भरते हैं।
3. सर्वहारा वर्ग में नए जीवन की आशा का संचार करते हैं।

(ग) कुँवर नारायण की कविता 'बात सीधी थी पर' के संदर्भ में 'भाषा में पेंच कसना' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

भाषा को चमत्कारी बनाने के लिए तरह-तरह के प्रयोग करना, अलंकारों, बिंबों, मुहावरों से उसे अनावश्यक रूप से सजाना-संवारना और इस चक्कर में उसे जटिल बना देना।

मूल्य बिंदु (कोई दो):

1. भाषा को प्रभावशाली/चमत्कारी दिखाने के लिए ज़बरदस्ती नए-नए प्रयोग करना।
2. तरह-तरह के अलंकारों से भाषा को अलंकृत करना।
3. बिना ज़रूरत अलंकार, बिंब और मुहावरे ठूँसकर भाषा को कठिन बना देना – जिससे सीधी बात उलझ जाती है और उसका असर ख़त्म हो जाता है।

9. *फणीश्वरनाथ रेणु के पाठ 'पहलवान की ढोलक' का पठित गद्यांश (महामारी से जूझते गाँव की अँधेरी, सन्नाटे भरी रात – तारे, सियारों-उल्लू की आवाज़ें, कराहते लोग; गद्यांश यहाँ प्रस्तुत नहीं) – इस पर आधारित प्रश्नों के लिए सबसे उपयुक्त विकल्प चुनिए (5 × 1 = 5)।* **5**

(क) अँधेरी रात चुपचाप आँसू क्यों बहा रही थी?

(A) जंगली पशुओं की डरावनी आवाज़ के कारण

(B) प्रकृति की असमर्थता व विवशता के कारण

(C) महामारी के कारण गाँव वालों की असहाय स्थिति से दुखी होने के कारण

(D) रात में फैले अंधकार और सन्नाटे के डर के कारण

उत्तर
(C) महामारी के कारण गाँव वालों की असहाय स्थिति से दुखी होने के कारण

लेखक ने रात का मानवीकरण किया है। हैजे-मलेरिया से गाँव में रोज़ मौतें हो रही थीं; लोग असहाय थे। इसी दुख से मानो रात भी चुपचाप रो रही थी (ओस को आँसू के रूप में देखा गया)।

(ख) स्तंभ-I को स्तंभ-II से मिलाइए:

क. प्रकाश का नाम नहीं ख. तारे की ज्योति और शक्ति रास्ते में ही समाप्त होना ग. चित न होना

(i) हार न मानना (ii) आशा और जिजीविषा का अभाव (iii) पीड़ित गाँव वालों की मदद न कर पाना

(A) क-(iii), ख-(i), ग-(ii)

(B) क-(ii), ख-(iii), ग-(i)

(C) क-(i), ख-(ii), ग-(iii)

(D) क-(i), ख-(iii), ग-(ii)

उत्तर
(B) क-(ii), ख-(iii), ग-(i)

क. धरती पर कहीं प्रकाश न होना = गाँव में आशा और जीने की इच्छा का अभाव → (ii)।
ख. संवेदनशील तारा धरती तक आना चाहे पर उसकी रोशनी रास्ते में ही ख़त्म हो जाए = दुखी गाँव वालों की सहायता न कर पाना → (iii)।
ग. 'चित न होना' (कुश्ती में पीठ ज़मीन पर न लगना) = हार न मानना → (i)।

(ग) लेखक ने रात के भयावहपन का वर्णन किस प्रभाव को दिखाने के लिए किया है?

(A) महामारी की भयानकता और दुष्प्रभाव का उल्लेख करने हेतु

(B) निस्तब्धता में मानवीय पीड़ा की झलक दिखाने हेतु

(C) रात में भी गाँव में हल्की चहल-पहल बताने हेतु

(D) रात में बच्चों के उत्साह व निडरता का प्रदर्शन करने हेतु

उत्तर
(A) महामारी की भयानकता और दुष्प्रभाव का उल्लेख करने हेतु

अँधेरा, सन्नाटा, सियारों का रोना, उल्लू की डरावनी आवाज़, कराहते रोगी – यह सब महामारी से उजड़ते गाँव का भयावह वातावरण रचता है। मुख्य उद्देश्य महामारी के भीषण प्रभाव को दिखाना है।

(घ) इनमें से किसका उल्लेख गद्यांश में नहीं है?

(A) रात्रि की निस्तब्धता

(B) तारों की भावुकता

(C) उत्तेजना युक्त उत्साह

(D) आहों का हृदय में दबना

उत्तर
(C) उत्तेजना युक्त उत्साह

गद्यांश में रात की निस्तब्धता, भावुक तारे का टूटकर धरती की ओर आना और सिसकियों-आहों को हृदय में दबाने का वर्णन है। पूरे अंश का भाव शोक और भय का है – उत्साह या उत्तेजना का कहीं उल्लेख नहीं।

(ङ) 'पेचक (उल्लू) की डरावनी आवाज़' का प्रतीकार्थ क्या है?

(A) जीव-जंतुओं की सक्रियता
(B) **मृत्यु या अनिष्ट की आहट**
(C) पक्षियों की स्वाभाविक ध्वनि
(D) ग्रामीण परिवेश की सजीवता

उत्तर

(B) मृत्यु या अनिष्ट की आहट

लोक-मान्यता में उल्लू का बोलना अशुभ माना जाता है। महामारी के बीच उसकी डरावनी आवाज़ आने वाली मौत या किसी अनिष्ट का संकेत बनकर आती है।

10. *निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए (2 × 3 = 6)।* **6**

(क) 'भक्तिन' पाठ के आधार पर लिखिए कि महादेवी वर्मा ने भक्तिन के साथ अपने संबंध को किस रूप में अनुभव किया।

उत्तर

सेविका होते हुए भी भक्तिन का स्वामिनी पर अधिकार-भाव था; वह लेखिका की भ्रमण की एकांत साथिन, परिवार की आत्मीय सदस्य, स्नेही हितैषी और उनके व्यक्तित्व का ज़रूरी हिस्सा बन गई थी।

मूल्य बिंदु (कोई तीन):

1. भक्तिन नौकरानी थी, पर वह लेखिका पर मालकिन जैसा अधिकार जताती थी।
2. वह लेखिका की यात्राओं/भ्रमण में एकांत की साथी थी।
3. लेखिका उसे अपने व्यक्तित्व का अभिन्न अंश मानती हैं – उसे हटाया नहीं जा सकता।
4. वह परिवार की आत्मीय सदस्य थी।
5. वह लेखिका की स्नेही हितैषी थी, संकट (युद्ध के समय भी) में साथ छोड़ने को तैयार नहीं।

इसीलिए उनका संबंध स्वामी-सेवक से ऊपर उठकर आत्मीयता का था।

(ख) धर्मवीर भारती के पाठ 'काले मेघा पानी दे' में लोक-प्रचलित विश्वास और विज्ञान के द्वंद्व को किस प्रकार चित्रित किया गया है?

उत्तर

गाँव वाले वर्षा के लिए इंद्र को प्रसन्न करने हेतु 'इंदर सेना' पर सहेजा हुआ पानी अर्घ्य/दान मानकर डालते हैं; वैज्ञानिक सोच वाला लेखक इसे पानी की निर्मम बर्बादी और अंधविश्वास मानता है, पर सामाजिक-सांस्कृतिक दबाव (जीजी के स्नेह) के कारण परंपरा मानने को विवश होता है।

मूल्य बिंदु (कोई तीन):

1. सूखे में 'इंदर सेना' (गाँव के लड़कों की टोली) घर-घर जाकर इंद्र देवता से पानी माँगती है।
2. लोग पानी की कमी के बावजूद सहेजकर रखा जल त्याग और दान समझकर उन पर डालते हैं।
3. लेखक (आर्य समाजी, वैज्ञानिक सोच) इसे पानी की बेरहम बर्बादी और अंधविश्वास मानता है।
4. जीजी त्याग और दान का तर्क देती हैं – 'पहले कुछ दोगे तभी पाओगे'; लेखक तर्क में हारकर भी पूरी तरह सहमत नहीं होता। वैज्ञानिक दृष्टि के बावजूद सामाजिक-सांस्कृतिक दबाव में परंपरा को मानने की विवशता – यही द्वंद्व है।

(ग) डॉ. भीमराव आंबेडकर के पाठ 'श्रम विभाजन और जाति-प्रथा' के आधार पर बताइए कि श्रम विभाजन किसे कहते हैं और सभ्य समाज के लिए इसकी क्या आवश्यकता है।

उत्तर

रुचि, योग्यता और दक्षता के आधार पर मनुष्य के उपयोगी कामों का बँटवारा श्रम विभाजन है; यह कार्य-कुशलता, उत्पादकता बढ़ाने और आर्थिक समृद्धि के लिए आवश्यक है।

श्रम विभाजन (1 अंक): समाज के उपयोगी कार्यों को व्यक्तियों की रुचि, योग्यता और कुशलता के अनुसार बाँटना।

आवश्यकता (2 अंक):

1. हर व्यक्ति अपनी योग्यता का काम करे तो कार्य-कुशलता बढ़ती है।
2. कार्य-क्षमता और उत्पादकता बढ़ती है।
3. समाज और देश आर्थिक रूप से समृद्ध होते हैं।

सावधानी: आंबेडकर के अनुसार जाति-प्रथा श्रम विभाजन नहीं, श्रमिक विभाजन है – क्योंकि वह जन्म के आधार पर पेशा तय करती है।

11. *निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए (2 × 2 = 4)।* **4**

(क) जैनेंद्र कुमार के पाठ 'बाज़ार दर्शन' के आधार पर भगत जी के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर

संयमी; संग्रह, तृष्णा, लोभ और धन-संचय से दूर; बाज़ार के आकर्षण से मुक्त; केवल ज़रूरत का सामान (जीरा-नमक) खरीदने वाले; ऐसे ग्राहक जो बाज़ार को सार्थक बनाते हैं।

मूल्य बिंदु (कोई दो):

1. संयमी – चूरन बेचकर रोज़ छह आने से अधिक नहीं कमाते।
2. संग्रह, तृष्णा, लोभ और धन जोड़ने की भावना से परे।
3. बाज़ार की चकाचौंध उन्हें लुभा नहीं पाती।
4. लक्ष्य-केंद्रित खरीदारी – केवल आवश्यक वस्तु लेकर लौट आते हैं।
5. ऐसे क्रेता-विक्रेता ही बाज़ार को सही अर्थ (सार्थकता) देते हैं।

(ख) हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध 'शिरीष के फूल' में शिरीष की तुलना किससे की गई है और क्यों?

उत्तर

कालजयी अवधूत (संन्यासी) से; क्योंकि दोनों सुख-दुख, अनुकूल-प्रतिकूल किसी भी परिस्थिति से विचलित नहीं होते – भीषण गरमी में भी शिरीष हरा-भरा, फूलों से लदा और अपनी मस्ती में रहता है।

किससे (1 अंक): कालजयी अवधूत से।

क्यों (1 अंक, कोई एक):

1. सम-विषम हर स्थिति में दोनों अप्रभावित रहते हैं।
2. जेठ की तपती धूप में भी शिरीष हरा-भरा रहता है, जैसे अवधूत दुख में हार नहीं मानता।
3. आठों पहर अपनी धुन में मस्त, बेपरवाह, सरस बना रहता है।

(ग) 'दासता केवल कानूनी पराधीनता का नाम नहीं है' – इस विचार के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि डॉ. भीमराव आंबेडकर ने 'मेरी कल्पना का आदर्श समाज' में दासता को किन व्यापक अर्थों में समझाया है।

उत्तर

जब व्यक्ति को दूसरों द्वारा तय किया गया व्यवहार और कर्तव्य निभाने को विवश किया जाए, उसे अपनी शक्ति का प्रभावी उपयोग करने और अपनी इच्छा से पेशा चुनने की स्वतंत्रता न हो – वह भी दासता है।

मूल्य बिंदु (कोई दो):

1. दूसरों द्वारा निर्धारित आचरण और कर्तव्यों को मानने की मजबूरी।
2. अपनी क्षमता का सक्षम और प्रभावशाली उपयोग करने की स्वतंत्रता का न होना।
3. अपनी रुचि के अनुसार काम या व्यवसाय चुनने की आज़ादी न होना (जाति-प्रथा इसका उदाहरण)।

अर्थात कानूनन स्वतंत्र होकर भी व्यक्ति सामाजिक रूप से दास हो सकता है।

12. *निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए (2 × 5 = 10)।* **10**

(क) 'सिल्वर वैडिंग' (मनोहर श्याम जोशी) को आज के युग में बदलते जीवन-मूल्यों की कहानी कहा जाता है। स्पष्ट कीजिए कि ये जीवन-मूल्य कौन-से हैं और क्यों बदल रहे हैं।

उत्तर

बदलते मूल्य: आधुनिक दिखावटी जीवन-शैली बनाम परंपरागत संस्कार, मानवीय मूल्यों का हाशिए पर जाना, पाश्चात्य प्रभाव, नैतिक मूल्यों का ह्रास, व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर ज़ोर, रिश्तों में दूरी। कारण: व्यक्तिवादी सोच, वैचारिक मतभेद, औद्योगीकरण-शहरीकरण, पीढ़ी-अंतराल, पश्चिमी संस्कृति का आकर्षण।

जीवन-मूल्य (2 अंक, कोई दो):
1. यशोधर बाबू के परंपरागत संस्कार और बच्चों की आधुनिक, दिखावे भरी जीवन-शैली का टकराव (केक काटना, पार्टी, अंग्रेज़ी रंग-ढंग)।
2. मानवीय संवेदनाओं, बड़ों के सम्मान जैसे मूल्यों का पीछे छूटना।
3. पाश्चात्य संस्कृति का बढ़ता प्रभाव, नैतिक/पारंपरिक मूल्यों का ह्रास।
4. व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सर्वोपरि मानना; रिश्तों में अलगाव – घर में रहकर भी यशोधर बाबू अकेले।

कारण (3 अंक, कोई तीन):
1. व्यक्तिवादी सोच।
2. पीढ़ियों के बीच वैचारिक मतभेद (पीढ़ी-अंतराल)।
3. औद्योगीकरण और शहरीकरण।
4. पश्चिमी चमक-दमक के प्रति आकर्षण।

उत्तर में कहानी के प्रसंग (बच्चों का व्यवहार, पत्नी का बदलना, किशनदा की स्मृति) जोड़ें।

(ख) 'जूझ' (आनंद यादव) पाठ में कथानायक कहता है कि खेती उसे गड्ढे में धकेल रही है, पढ़-लिख जाएगा तो नौकरी लगेगी और हाथ में चार पैसे रहेंगे। इस कथन के संदर्भ में ग्रामीण युवाओं की मानसिक स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर

खेती में रुचि घटना; खेती से आर्थिक संपन्नता का सपना पूरा न होने की धारणा; बेहतर जीवन-स्तर की चाह; पढ़-लिखकर नौकरी से अच्छा जीवन जीने की लालसा; शहर का आकर्षण; कठिन श्रम और कम आय के कारण पलायन की सोच।

मूल्य बिंदु (पाँच, तर्कपूर्ण अन्य उत्तर भी मान्य):
1. ग्रामीण युवाओं की खेती में रुचि कम या समाप्त हो रही है।
2. उन्हें लगता है कि खेती से कभी आर्थिक समृद्धि नहीं आएगी – बस गुज़ारा होता है।
3. वे अपना जीवन-स्तर ऊपर उठाना चाहते हैं।
4. शिक्षा को नौकरी और सुरक्षित, सम्मानजनक जीवन की सीढ़ी मानते हैं – कथानायक भी इसी कारण पढ़ाई के लिए दादा से जूझता है।
5. शहरों की सुविधाएँ उन्हें आकर्षित करती हैं।
6. खेती बहुत मेहनत वाली है और आय अपेक्षा से कम – इससे पलायन की सोच बनती है।
7. कठोर शारीरिक श्रम के स्थान पर मानसिक श्रम से जीवन बदलने की इच्छा।

(ग) 'अतीत में दबे पाँव' (ओम थानवी) के आधार पर विवेचना कीजिए कि लेखक ने सिंधु घाटी सभ्यता के सबसे बड़े नगर मुअनजो-दड़ो की नगर-योजना की तुलना आज के नगरों से किस प्रकार की है।

उत्तर

मुअनजो-दड़ो नगर-नियोजन की अनूठी मिसाल (ग्रिड योजना, सीधी चौड़ी सड़कें-गलियाँ, जल आपूर्ति व निकासी का सुंदर प्रबंध, घरों के दरवाज़े मुख्य सड़क की ओर नहीं), जबकि आज के शहरों में

नियोजन के नाम पर अव्यवस्था, नीरस सेक्टर कॉलोनियाँ, जल-प्रबंधन व निकासी की कमी और सड़क की ओर खुलते दरवाज़े।

मूल्य बिंदु (पाँच):
1. मुअनजो-दड़ो नगर-नियोजन का अनोखा उदाहरण है; आज के शहरों में नियोजन के नाम पर प्रायः अराजकता है।
2. वह ग्रिड प्लान पर बसा था, सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं; आज के बड़े शहर इतनी तेज़ी से फैलते हैं कि सहज विकास की गुंजाइश नहीं रहती।
3. इमारतें खंडहर हो गईं, पर सड़कों-गलियों का विस्तार आज भी स्पष्ट दिखता है; आज की सेक्टर-मार्का कॉलोनियों में आड़ा-सीधा नियोजन तो है पर रहन-सहन नीरस है।
4. वहाँ पानी की उपलब्धता (कुएँ) और ढकी नालियों से निकासी की उत्तम व्यवस्था थी; आज अनेक शहरों में जल-प्रबंधन और जल-निकासी की भारी कमी है।
5. वहाँ घरों के दरवाज़े मुख्य सड़क पर न खुलकर पीछे/गलियों में खुलते थे, जिससे दुर्घटनाएँ कम होतीं; आज ज़्यादातर दरवाज़े मुख्य सड़क पर खुलते हैं।

— समाप्त —

Questions restated from the CBSE Class XII Board Examination 2026 (set 2/1/1) for practice. Reading passages and map items are described, not reproduced.